



विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें-

जी० वी० टी० - कृषि विज्ञान केन्द्र

चकेश्वरी फार्म, गोड्डा - 814133

मो० - 9534524977, 8986838568, 9939498711

आमार : डा० अंजनी कुमार (निदेशक, अटारी, ज़ोन- IV, भा० कृ० अनु० प०, पटना), डा० वीरेन्द्र कुमार प्रसाद (आंचलिक कार्यक्रम प्रबंधक, जी० वी० टी०, रांची), डा० सतीश कुमार (विषय वस्तु विशेषज्ञ, पशुपालन), डा० ए० पी० ठाकुर (मिट्टी जाँच प्रभारी), श्री रजनीश प्रसाद राजेश (विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि मौसम विशेषज्ञ), वसीम अकरम (अग्रोमेट आब्जर्वर), श्री राकेश रौशन कुमार सिंह (फॉर्म प्रबंधक, जी० वी० टी०-के० वी० के०, गोड्डा), श्री बुद्धदेव सिंह (सहायक, जी० वी० टी०-के० वी० के०, गोड्डा) एवं अटारी, ज़ोन- IV भा० कृ० अनु० प०, पटना

टाईम प्रेस, हटिया चौक, गोड्डा, मो०- 9931120405



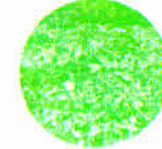
जी० वी० टी० - कृषि विज्ञान केन्द्र

गोड्डा

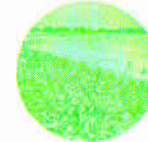
आधुनिक कृषि में
जैविक खेती का महत्व



वर्मीकम्पोस्ट



हरी खाद



जैविक प्रबंधन

जैविक खेती



पशुपालन



खाद



जैव उर्वरक



फसल सुरक्षा

डॉ० स्तिश दुबे

विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि प्रसार)

डॉ० अमितेश कुमार सिंह

विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान)

डॉ० हेमन्त कुमार चौरसिधा

विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान)

डॉ० प्रगतिष्का मिश्रा

विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)

डॉ० सूर्य भूषण

विषय वस्तु विशेषज्ञ (पादप सुरक्षा)

डॉ० रवि शंकर

वरीय वैज्ञानिक-सह-प्रधान

जैविक खेती

जैविक खेती, खेती करने का वह तरीका है जिसके अन्तर्गत रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक एवं फफूंदनाशी रसायनों का प्रयोग न करके इनकी जगह जैविक उत्पाद जैसे— गोबर की खाद, कम्पोस्ट, केंचुआ खाद, जीवाणु खाद, हरी खाद, फसल चक्र, फसल अवशेष, प्राकृतिक मित्र कीटों, जैविक कीटनाशियों का उपयोग किया जाता है।

जैविक खाद

जैव पदार्थों को सड़ा-गला कर के तैयार की गयी ऐसी खाद जिसमें सूक्ष्म जीवों की संख्या व पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में उपस्थित हों जैविक खाद कहलाती है।

जैविक खाद क्यों बनाए ?

पौधे मृदा से अपनी वृद्धि के लिए 17 आवश्यक पोषक तत्व लेते रहते हैं जिस कारण मृदा में पोषक तत्वों की कमी होती रहती है। मृदा में पोषक तत्वों की पूर्ति करने के लिए ही जैविक खादों का उपयोग किया जाता है। जैविक खाद बनाने की अनेक विधियां हैं। यहां हम जैविक खाद बनाने की सर्वाधिक प्रचलित विधियों के बारे में जानकारी दें रहे हैं :-

तरल जीवामृत

तरल जीवामृत एक ऐसा तरल खाद है जोकि मृदा में सूक्ष्म जीवों की संख्या में वृद्धि करने के साथ-साथ मृदा की उर्वरता को भी बढ़ाता है। जीवामृत का उपयोग खेत में करने से मृदा में कार्बन व नाइट्रोजन के अनुपात में सुधार आता है। जीवामृत पौधों की वृद्धि और विकास में सहायता करता है तथा पौधों की प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ाता है जिससे पौधे स्वस्थ बने रहते हैं तथा फसल से अच्छी उपज मिलती है।

जीवामृत बनाने की सामग्री :-

1. प्लास्टिक का ड्रम - 200 लीटर (क्षमता)
2. देशी गाय का गोबर - 10 किलोग्राम
3. देशी गाय का गौमूत्र - 5 से 10 लीटर
4. बेसन - 1 किलोग्राम
5. गुड़ - 1 किलोग्राम अथवा 4 लीटर गन्ने का रस
6. खेत की मिट्टी - 1 किलोग्राम (जिसमें किसी रसायन का उपयोग न किया गया हो)
7. ताजा पानी - 150 लीटर

बनाने की विधि : सर्वप्रथम उपलब्ध प्लास्टिक ड्रम में 50 से 60 लीटर पानी लेकर 10 किलोग्राम गोबर को लकड़ी से अच्छी तरह मिलायें। तत्पश्चात्

उपलब्धतानुसार 5 से 10 लीटर गौमूत्र मिलाया जाए। मिश्रण में 1 किलोग्राम उपजाऊ मिट्टी मिला दिया जाये। पात्र में उपलब्ध जीवाणुओं के भोजन के लिए 1 किलोग्राम बेसन, 1 किलोग्राम गुड़ मिलाकर घोल में अतिरिक्त पानी मिलाकर 200 लीटर प्लास्टिक ड्रम में डालकर अच्छी तरह मिलायें। कपड़े से या ढक्कन से प्लास्टिक ड्रम को ढक दें। अब इस मिश्रण को 3 दिन तक किण्वन क्रिया के लिए छाँव में रखें तथा दिन में 3 बार (सुबह, दोपहर, शाम) लकड़ी से मिलाया जाये। 3 दिन बाद जीवामृत तैयार हो जाता है। तैयार जीवामृत को 5 से 6 दिन के अंदर प्रयोग कर लिया जाये।

उपयोग करने की विधि :

1. एक एकड़ के खेत में सिंचाई के पानी के साथ सायं के समय देने से फसलों को अधिक लाभ होता है। जीवामृत का प्रयोग पहली सिंचाई से आरम्भ करके तीन या चार सिंचाई तक करते रहने से फसलों को अधिक लाभ होता है। ऐसा करने से मृदा में सूक्ष्म जीवों की संख्या में बढ़ोतरी तो होती ही है साथ ही इससे फसलों की अच्छी बढ़वार भी होती है।
2. पलेवा एवं प्रत्येक सिंचाई के साथ 200 लीटर जीवामृत का प्रयोग एक एकड़ में सामान्य रूप से प्रयोग किया जाये।
3. जीवामृत को अच्छी तरह से छानकर टपक अथवा बौछारी (ड्रिप/स्प्रिंकलर) सिंचाई के माध्यम से प्रयोग किया जाये, जोकि 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए पर्याप्त है।
4. फलदार पेड़ों के लिए दोपहर के समय पेड़ों की जो छाया पड़ती है उस छाया के बाहर की कक्षा के पास चारों तरफ 25 से 50 सेमी नाली बनाकर प्रति पेड़ 2 से 5 लीटर जीवामृत महीने में दो बार पानी के साथ छिड़काव करें। जीवामृत छिड़कते समय भूमि में नमी होनी चाहिए।

घन जीवामृत

घन जीवामृत एक सूखी खाद है जिसे बुवाई के समय या पानी देने के तीन दिन बाद दे सकते हैं।

घन जीवामृत बनाने की सामग्री

1. देशी गाय का ताजा गोबर—100 किलोग्राम
2. देशी गाय का मूत्र— 5 लीटर
3. बेसन— 1 किलोग्राम
4. गुड़— 2 किलोग्राम
5. खेत की मिट्टी— 1 किलोग्राम

बनाने की विधि : घन जीवामृत बनाने के लिए 100 किलो ग्राम गोबर, 2

किलो ग्राम गुड़, 2 किलो ग्राम बेसन, 1 किलो ग्राम खेत की जीवाणुयुक्त मिट्टी डालकर अच्छी तरह मिश्रण बना लें। इस मिश्रण में थोड़ा-थोड़ा गौमूत्र डालकर उसे अच्छी तरह मिलाकर गूथ लें ताकि उसका घन जीवामृत बन जाये। अब इस गीले घन जीवामृत को 48 घंटे छाँव में फैलाकर सुखा लें। सूखने के बाद घन जीवामृत को लकड़ी से टोक कर बारीक कर लें तथा इसे बोरों में भरकर छाँव में रख दें तैयार घन जीवामृत को 6 महीने तक भंडारित करके रख सकते हैं।

उपयोग करने की विधि : खेत की जुताई के बाद घन जीवामृत का प्रयोग सबसे अच्छा होता है। किसी भी प्रकार की फसल की बुवाई के समय प्रति एकड़ 100 किलोग्राम जैविक खाद और 20 किलोग्राम घन जीवामृत को बीज के साथ बोने से अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं।

केंचुआ खाद

केंचुआ को किसानों का मित्र एवं भूमि का आंत कहा जाता है। केंचुआ कार्बनिक पदार्थ, ह्यूमस तथा मिट्टी को एक सार करके जमीन के अन्दर अन्य परतों में फैलाता है। इससे जमीन भुरभुरी होती है एवं हवा का आवागमन बढ़ जाता है साथ ही साथ जलधारण क्षमता भी बढ़ जाती है। विशेष प्रकार के केंचुआ (जॉकटी) द्वारा गोबर, सड़ी-गली पत्तियों, जलकुम्भी अन्य जैविक पदार्थ इत्यादि खाने के बाद जो मल त्याग किया जाता है, उसे केंचुआ खाद कहते हैं। इसमें सूक्ष्म कार्बनिक पदार्थ आवश्यक मात्रा में नेत्रजन, फासफोरस एवं पोटेश के अलावा सूक्ष्म पोषक तत्व, एन्जाइम एवं वृद्धि करने वाले हार्मोनस इत्यादि उपलब्ध होते हैं, जो फसलों के लिए आवश्यक होते हैं। ये सभी प्रकार के पौधों के लिए पूर्ण संतुलित आहार है। जिस विशेष प्रकार के जॉकटी का प्रयोग केंचुआ खाद बनाने में प्रयोग किया जाता है, उसे अंग्रेजी में "आईसिनिया फोटिडा" कहते हैं। केंचुओं द्वारा भूमि की उर्वरता, उत्पादकता और भूमि के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों को लम्बे समय तक अनुकूल बनाये रखने में मदद मिलती है।

केंचुआ खाद में पाये जाने वाले पोषक तत्व :-

देश के विभिन्न शोधसंस्थानों में किये गये परिक्षणों के अनुसार केंचुआ खाद में जैव कार्बन 20-25 प्रतिशत, नेत्रजन- 0.5-1.0 प्रतिशत, फॉस्फोरस- 0.15-0.56 प्रतिशत, पोटेश- 0.06-0.3 प्रतिशत, कैल्शियम- 2.0-4.0 प्रतिशत, मैग्निशियम- 0.4-6 प्रतिशत, सोडियम- 0.02 प्रतिशत, सल्फर- 100-500 पी.पी.एम., तांबा- 27 पी.पी.एम., लोहा- 7563 पी.पी.एम., मैंगनीज- 475 पी.पी.एम., बोरॉन- 34 पी.पी.एम. तथा एल्युमीनियम- 7012 पी.पी.एम. पाया जाता है। केंचुआ खाद का पी.एच. मान 7-7.8 तथा इसमें कार्बन और नेत्रजन का अनुपात 12:1 होता है। केंचुआ खाद में उपरोक्त तत्व घुलशील अवस्था में रहते हैं।

केंचुआ खाद उत्पादन विधि :-

केंचुआ खाद बनाने के लिए 3 फीट लम्बा, 3 फीट चौड़ा तथा 2.5 फीट ऊँचा गड़ढा तैयार करते हैं, जिसमें 2 फीट ऊँचाई तक 10-15 दिन पुराना गोबर भरते हैं तथा लगभग केंचुए छोड़ देते हैं। गोबर के ऊपर 5-10 सेमी पुआल/सुखी पतियाँ डाल दें। इस ईकाई में बराबर 20-25 दिन तक पानी का छिड़काव करें। इसमें 40 प्रतिशत नमी को बनाये रखने की आवश्यकता होती है। 40-45 दिन बाद केंचुआ खाद बन जाये तो 2-3 दिन तक पानी का छिड़काव बन्द कर दें। गड़ढे को सीधे तेज धूप तथा बरसात बचाने के लिए छप्पर से ढक दें। जब खाद पकी हुई चाय की पत्ती की तरह दिखे तो केंचुआ खाद तैयार समझें।

गड़ढे से खाद निकालना :-

तैयार खाद को गड़ढे से एक तरफ एकत्र कर दें तथा दूसरी ओर फिर से 10-15 दिन पुराना गोबर भर दें। ऐसा करने से तैयार खाद के सभी केंचुए नये गोबर में चले जायेंगे। खाद को गड़ढे से निकाल कर छाया में ढेर लगा दें और हल्का सूखने के बाद 2 मि.मी. छन्नी से छान ले। छनी हुई खाद को बोरी में भर कर रख लें। इस तैयार खाद में 20-25 प्रतिशत नमी होनी चाहिए। खाद को ऐसी जगह स्टोर करें जहाँ खाद सूख न सकें।

केंचुआ खाद उपयोग करने की विधि :-

1. फलदार पेड़ों में आवश्यकता अनुसार 1-10 किलोग्राम प्रति पेड़ केंचुआ खाद का प्रयोग करें।
2. सब्जी की फसलों में 6-8 क्विंटल प्रति बीघा के हिसाब से केंचुआ खाद का प्रयोग करें।
3. पोषण वाटिका तथा गमलों हेतु 100 ग्राम प्रति गमला प्रयोग करें।
4. खाद्यान फसलों में 3-4 क्विंटल प्रति बीघा केंचुआ खाद का प्रयोग करें।

वर्मीवाश

वर्मीवाश को केंचुओं व गोबर की सहायता से तैयार किया जाता है। इसका उपयोग फसलों की वृद्धि व अधिक फसल उत्पादन हेतु करते हैं। वर्मीवाश में मौजूद सूक्ष्म जीवाणुओं, ह्यूमिक अम्ल व हार्मोन्स के प्रयोग से भूमि का पी. एच. मान सामान्य बना रहता है।

वर्मीवाश बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

1. केंचुए - 5 किलोग्राम
2. गोबर - 50 किलोग्राम
3. जैव पदार्थ - 2 किलोग्राम
4. ताजा पानी - 10 लीटर
5. प्लास्टिक का एक ड्रम - 100 लीटर क्षमता

बनाने की विधि : छोटे ड्रम के ऊपर बड़े ड्रम को स्टैन्ड की सहायता से रख देते हैं। बड़े ड्रम की तली में एक निकास द्वार बना कर इस पर एक टाट-पट्टी रखकर गोबर व केंचुए डालकर पानी छिड़क देते हैं। इसके ऊपर पानी से भरी छिद्रयुक्त बाल्टी लटका दें। इससे धीरे-धीरे पानी टपकता रहता है और नीचे वाले ड्रम में वर्मीवाश इकट्ठा होता रहता है।

उपयोग : वर्मीवाश में 10 गुणा पानी मिलाकर फसलों पर छिड़काव करने से फसलों की अच्छी बढ़वार होता है।

बीजामृत

यह बीजोपचार करने के लिए उपयोग किया जाता है। बीजामृत से बीजोपचार करने के पश्चात् बीज की बुआई करने से अंकुरण प्रतिशत बढ़ जाता है और विभिन्न रोग व बीमारियों से भी बीज व पौधों का बचाव होता है। बीजोपचार करके बुआई करने से बीज की मात्रा में भी बचत होती है।

बीजामृत बनाने के लिए आवश्यक सामग्री :

1. प्लास्टिक का एक ड्रम - 50 लीटर (क्षमता)
2. देशी गाय का गोबर - 5 किलोग्राम
3. देशी गाय का मूत्र - 5 लीटर
4. चूना - 50 ग्राम
5. खेत की मिट्टी - 500 ग्राम
6. ताजा पानी - 20 लीटर

बनाने की विधि : बीजामृत बनाने से एक दिन पूर्व 5 किलोग्राम गाय के गोबर को एक कपड़े में बांधकर 20 लीटर पानी में डुबोकर रख दें। इसी समय 50 ग्राम चूना 250 मिलीलीटर पानी में भिगोकर रख दें। अगले दिन कपड़े में बंधे गोबर को उसी पानी में मसलकर कपड़े सहित उसे बाहर निकाल लें। इस प्रकार प्राप्त घोल में चूने का घोल, 5 लीटर गौमूत्र व आधा किलोग्राम खेत की मिट्टी मिला लें। यह घोल बीजामृत कहलाता है।

उपयोग करने की विधि : बीजामृत में 15 से 30 मिनट तक बीज अथवा पौधा को डुबोकर उसे बाहर निकाल लेते हैं। इसके पश्चात् बीज को छायादार स्थान पर 10 से 12 घण्टे तक रखते हैं, ताकि बीजामृत के घोल को बीज अच्छी तरह से सोख ले।

संजीवक

जैविक खेती में संजीवन मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को बढ़ाने हेतु उपयोग किया जाता है।

संजीवक बनाने के लिए आवश्यक सामग्री :

1. प्लास्टिक का एक ड्रम — 100 लीटर (क्षमता)
2. गाय का गोबर — 30 किलोग्राम
3. गौमूत्र — 3 लीटर
4. गुड़ — 500 ग्राम
5. पानी — 100 लीटर

बनाने की विधि : 100 लीटर पानी में 30 किलोग्राम गाय का गोबर, 3 लीटर गौमूत्र, 500 ग्राम गुड़ को अच्छी तरह घोल कर मिश्रण को 10 दिनों तक सड़ाते हैं। 10 दिनों बाद संजीवक तैयार हो जाता है। संजीवन को चारों किनारे से तथा बीच से खेतों के भीतर डालने से सूक्ष्म जीव पूरी तरह से खेत में फैल जाते हैं।

उपयोग करने की विधि : संजीवक का उपयोग खेतों के भीतर पहले वर्ष में 1000 लीटर प्रति एकड़, दूसरे वर्ष में 800 लीटर प्रति एकड़, तीसरे वर्ष 600 लीटर प्रति एकड़ का उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रति एकड़ 3 टन सड़ी गोबर की खाद प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार उपयोग करने से फसलों पर बहुत ही अच्छा परिणाम मिलता है।

नीमास्त्र

नीमास्त्र एक जैविक कीटनाशक है जिसे नीम की हरी पत्तियाँ या सूखे फल, गौ मूत्र, गोबर एवं पानी की सहायता से बनाया जाता है।

नीमास्त्र बनाने के लिए आवश्यक सामग्री :

1. प्लास्टिक का एक ड्रम — 200 लीटर (क्षमता)
2. गाय का गोबर — 2 किलोग्राम
3. गौमूत्र — 10 लीटर
4. पानी — 200 लीटर
5. नीम के पत्ते या नीम के सूखे फल — 10 किलोग्राम

बनाने की विधि : सबसे पहले ड्रम में 100 लीटर पानी लें, इसमें 10 लीटर गौ मूत्र डाल दें। दो किलोग्राम देसी गाय के गोबर को अलग बर्तन में 10 लीटर पानी में मिला लें, गोबर और पानी को अच्छी तरह मिक्स करने के उपरांत इस घोल को 200 लीटर पानी वाले ड्रम में डाल दें। 10 किलोग्राम नीम की पत्तियों, फल को हल्का सा पत्थर से कूटकर, 100 लीटर पानी वाले ड्रम में डाल दें, इसके उपरांत अब इस मिश्रण को सुबह व शाम (दिन में 2 बार) लकड़ी से 10 से 15 बार घुमाना है ताकि घोल अच्छी तरह मिक्स हो जाए। 3 से 4 दिन के उपरांत नीमास्त्र तैयार हो जाता है।

अवधि प्रयोग— नीमास्त्र का प्रयोग 6 महीने तक कर सकते हैं।

सावधानियाँ—

1. नीमास्त्र को छांव में रखें और धूप से बचाएं।
2. गौमूत्र प्लास्टिक के बर्तन में लें या रखें

उपयोग— 100 लीटर पानी में तैयार नीमास्त्र को छान कर मिलायें और स्प्रे मशीन से छिड़काव करें। नीमास्त्र का प्रयोग रस चूसने वाले कीटों और छोटी सुड़ियों के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

वेस्ट डीकम्पोजर

वेस्ट डीकम्पोजर एक कृषि के लिए उर्वराशक्ति है, जिसे गाजियाबाद के नेशनल सेंटर ऑफ आर्गेनिक फार्मिंग ने तैयार किया है। इसे बनाने के लिए गाय का गोबर तथा फंगस का उपयोग किया गया है। इसका उपयोग जैविक खाद बनाने में किया जाता है। वेस्ट डीकम्पोजर के घोल को पानी में मिलाकर छिड़काव करने से भी फसल को फायदा होता है। वेस्ट डीकम्पोजर को जुताई से पहले भी उपयोग करने से खरपतवार जैविक खाद के रूप में बदल जाता है तथा मिट्टी हल्की हो जाती है।

वेस्ट डीकम्पोजर का घोल बनाने की सामग्री :-

1. प्लास्टिक का एक ड्रम — 100 लीटर (क्षमता)
2. गुड़ — 2 किलोग्राम
3. पानी — 200 लीटर
4. वेस्ट डीकम्पोजर — 20 ग्राम

वेस्ट डीकम्पोजर घोल बनाने की विधि :-

2 किलो गुड़ को 200 लीटर पानी वाले प्लास्टिक के ड्रम में मिलाए। अब एक बोतल वेस्ट डीकम्पोजर को लें और उसे गुड़ के घोल वाले प्लास्टिक ड्रम में मिला दें। ड्रम में सही ढंग से वेस्ट डीकम्पोजर के वितरण के लिए लकड़ी के एक डंडे से इसे हिलाये और व्यवस्थित ढंग से मिलाएं। ड्रम को ढक्कन या कपड़े से ढक दें और प्रत्येक दिन एक या दो बार इसको पुनः मिलाएं। 5 से 7 दिनों के बाद ड्रम में गोल क्रीमी तैरते दिखाई देंगे यानि एक बोतल से 200 लीटर वेस्ट डी कम्पोजर घोल तैयार हो जाता है।

नोट 1 :- किसान उपरोक्तानुसार 200 लीटर तैयार वेस्ट डीकम्पोजर घोल से 20 लीटर लेकर 2 किलो गुड़ और 200 लीटर पानी के साथ एक ड्रम में दोबारा घोल बना सकते हैं।

नोट 2 :- इस वेस्ट डीकम्पोजर घोल से किसान बड़े पैमाने पर बार-बार घोल जीवन भर बना सकते हैं।

उपयोग

कम्पोस्ट (खाद) बनाने में

वेस्ट डीकम्पोजर का उपयोग कम्पोस्ट (खाद) बनाने में किया जाता है जिसकी विधि निम्न प्रकार है :-

सबसे पहले छाया में एक प्लास्टिक की चादर बिछाते हैं तथा उस पर 1 टन फसल अपशिष्ट फैला देते हैं। अब इन फसल अपशिष्ट पर पानी का छिड़काव करते हैं और तैयार वेस्ट डीकंपोजर घोल की 20 लीटर मात्रा का छिड़काव करते हैं।

इस परत के ऊपर फसल अपशिष्ट की एक और परत फैलाते हैं फिर से इस परत के ऊपर 20 लीटर वेस्ट डीकंपोजर घोल का अच्छी तरह छिड़काव करते हैं। इस प्रकार तैयार 200 लीटर वेस्ट डीकंपोजर को अपशिष्टों की 20 परतों के लिए काम में लेते हैं। खाद बनाने की इस पूरी प्रक्रिया के दौरान व जब तक खाद बन ना जाये इसमें 60 प्रतिशत नमी बनाए रखते हैं, तथा इसे प्रत्येक 9 दिनों के अंतराल पर पलटते रहते हैं व से 40 दिनों में खाद उपयोग के लिए तैयार हो जाता है।

पर्णीय छिड़काव के रूप में

वेस्ट डीकम्पोजर के तैयार घोल को फसलों में पर्णीय छिड़काव के रूप में भी काम ले सकते हैं। 1 लीटर वेस्ट डीकम्पोजर घोल को 5 लीटर पानी में मिला कर फसलों पर छिड़काव करें। इस घोल को 10 दिन के अन्तराल पर एक फसल में 4 छिड़काव कर सकते हैं जो कई प्रकार की बीमारियों से पौधों की सुरक्षा करता है।

सिंचाई जल के साथ

वेस्ट डीकम्पोजर के तैयार घोल को सिंचाई जल के साथ मिलाकर भी दिया जाता है। बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति में 200 लीटर घोल प्रति एकड़ प्रयोग में लाया जाता है।

बीज उपचार में

इस घोल द्वारा बीजोपचार कर फसलों को कई प्रकार की बीज जनित बीमारियों से बचाया जा सकता है। जिसकी विधि निम्न प्रकार है :- सबसे पहले अपने हाथों में दस्ताने पहनें क्योंकि यह सूक्ष्म जीवों का घोल है हाथों में बदबू पैदा कर सकता है व हानिकारक भी हो सकता है। अब 1 बोटल की सामग्री को अच्छी तरह से 30 ग्राम गुड़ व थोड़े पानी के साथ अच्छी तरह मिला लेते हैं। वेस्ट डीकम्पोजर के तैयार घोल से लगभग 20 किलोग्राम बीज का उपचार किया जा सकता है। उपचारित बीज को आधे घंटे के लिए छाया में सुखा देते हैं। इस प्रकार उचारित बीज को बुवाई के लिए काम में लेते हैं।

जैविक खेती अपनाएं-जीवन को स्वस्थ बनाएं।